संताली लोकगीतों में अलंकार विधान

'अलङ्करोतीति अलंकारः' इस व्युत्पत्ति से निष्पन्न अलंकार पद का अर्थ अलंकृत करनेवाला-भूषण या गहना। जैसे-आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ती है। उसी प्रकार काव्यगत अलंकार से काव्य शरीर की शोभा बढ़ती है। आचार्य दंडी ने अलंकारों को काव्य के शोभाकारक धर्म बताया है। (काव्य शोभाकारान् धर्मालंकारान् प्रचक्षते)। लेकिन आचार्य वामन ने "काव्य शोभायाः कर्तारो धर्मा गुणाः कहकर गुणों को ही काव्य के शोभाकरक धर्म कहा है।"[21]

पं. रामेश्वर नाथ तिवारी के अनुसार, "काव्य की शोभा बढ़ाने वाले बाह्य धर्म को अलंकार कहते हैं।"[22]

पं. राम किशोर पाठक के अनुसार, "काव्य की सुन्दरता बढ़ाने वाले तत्व को अलंकार कहते हैं।"[23]

काव्य की आत्मा रस है और शब्द एवं अर्थ उसके (रचनात्मक काव्य के) अंग है। जिस प्रकार हार आदि अलंकार कामिनी के अंगों को सुशोभित करते हैं उसी प्रकार

Scanned with CamScanner

अनुप्रास, उपमादि अलंकार शब्दार्थरूप काव्य में चमत्कार उत्पन्न करते हैं।

अलंकार के प्रयोग से कविता का सौन्दर्य बढ़ जाता है। काव्य की आत्मा के रूप में रस की स्वीकृति दी गई है। किन्तु काव्य के सौन्दर्य को निखारने का प्रमुख साधन अलंकार ही है। काव्य का सौन्दर्य दो प्रकार से देखा जाता है। एक सुन्दी सरस शब्दों के यथास्थान जोड़ने से, दूसरा चमत्कारपूर्ण अर्थ प्रकट होने से। इसलिए अलंकार दो प्रकार के हुए- (क) शब्दालंकार, (ख) अर्थालंकार, कहीं-कहीं दोनों से उभयालंकार भी होता है।

संताली लोकगीतों में बहुत अलंकार नहीं हैं, परन्तु जो भी अलंकार हैं उनका महत्व अत्यधिक है। इनसे गीतों की रोचकता एवं माधुर्य में वृद्धि होती है। साथ ही गीतों के अर्थ बदल जाते हैं। इनके अध्ययन से लोकगीत के ज्ञात-अज्ञात रचनाकारों की भाषा-शैली का ज्ञान हो जाता है।

संताली लोकगीतों के शब्दालंकार एवं अर्थालंकारों का वर्णन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है-

(क) **शब्दालंकार**-जहाँ काव्य या लोकगीतों में सुन्दरता बढ़ाने में कारण शब्द हो, वहाँ शब्दालंकार होता है। प्रमुख शब्दालंकार तीन हैं- (1) अनुप्रास, (2) श्लेष और (3) यमक।

(1) अनुप्रास - "व्यंजन वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं।"[24] स्वरों की समानता नहीं रहने पर केवल व्यंजन से ही अनुप्रास घटित हो जाता है।

संताली विवाह दों गीत में अनुप्रास के कई उदाहरण मिलते हैं। जैसे-

सारी-सारी गेञ साड़ी कामा,
कुरूमुटु तेञ कुरता कामा।
माया जाला तेञमाला कामा,
नालां गेचो लां नापासुला।

गीत के प्रथम पंक्ति में सा, री, दूसरी पक्ति में कु, तीसरी पक्ति में मा, ला, एवं चौथी पंक्ति में ना, ला, वर्णों की आवृत्ति हुई है, अतः इसमें अनुप्रास अलंकार है। अनुप्रास से लोकगीतों की शब्द योजना में चमत्कार आता है, जैसे-

सिंगी सिञ सिंगे ञिदा,
पाप रेलिञ ताहें काना,
आड़ी लिञ रजन एना उताहली।

इसमें सि की आवृत्ति से गीत में चमक आयी है।

Scanned with CamScanner

(2) **श्लेष** – "श्लेष शब्द का अर्थ है चिपका हुआ। जब एक शब्द में ही कई अर्थ चिपके हुए होते हैं, तब श्लेष अलंकार माना जाता है। किसी लोकगीत या कविता में जब एक शब्द का एक बार ही प्रयोग होता है, किन्तु उसके कई अर्थ प्रकट होते हैं तब श्लेष अलंकार प्रकाशित होता है।"[25]

"श्लिष्ट शब्दों से अनेक अर्थों के विधान श्लेष अलंकार कहा जाता है। श्लिष्ट का अर्थ है अनेकार्थवाची। जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ हो वह श्लिष्ट है।"[26]

संताली लोकगीतों में श्लेषालंकार का भी प्रयोग अनेक स्थानों पर मिलता है- उदाहरणार्थ-

तोका एनाम मिरू दुलाड़ कुंयड़ी मिरू,
सोना थारी दाक्ा जोजो एन तिञ।
दू उड़ाक् में मिरू भूर ते दानां ओक् में,
आतु दिसोम रेयाक् दाया दुलाड़,
माया बागी काते उड़ाव जों में।

उक्त गीत में माता-पिता या कोई अपने प्यारी बेटी या बहन से कहता है कि ए बेटी या बहन कहाँ गयी प्यारी महुआ तोता, मेरा सोने का थाल भात खट्टा हो गया। जाओ बेटी या बहन या तोता उड़कर भोर को ओझल हो जाओ। अपने गाँव का प्यार एवं ममता त्यागकर उड़ जाओ। अर्थात् माता-पिता या भाई विवाहोपरान्त बेटी या बहन को ससुराल के लिए विदाई दे रहे हैं। यहाँ एक ही शब्द मिरू (तोता) के द्वारा बेटी और तोता पक्षी अर्थ निकलता है। अतः मिरू में श्लेष अलंकार है। एक अन्य गीत में भी मिरू शब्द का बेटी और तोता के रूप में वाचक है, जैसे-

दारा हरा ओड़ाक् रे,
बाबू हेंनाय गो मिरू हेनाय।
इञ दुञ मेना बाबू गेय रागा,
जाला किदिञाय आसुल मिरू।

गीत में कहा गया है कि विशाल घर में बाबू और बेटी हैं। रोने के आवाज सुनकर घर का कोई कहता है कि लड़का ही रोता होगा, पर पोसा हुआ तोता ही रो रहा था। इसलिए मिरू में श्लेष अलंकार है।

Scanned with CamScanner

(3) **यमक** – "शब्द की अनके बार भिन्न अर्थ में आवृत्ति यमक अलंकार है।"[27] इसमें एक ही शब्द बार-बार आता है, परन्तु प्रत्येक का अर्थ भिन्न-भिन्न होता है। जैसे-

सेदाय दोम मेन केद्दा,
पूँजी आमाञ बिटिञ पाटा आमा।
पूँजी आदिञ बाबाम पाटा आदिञ,
अजय गाड़ा गितिल बाबाम पूँजी आदिञ,
एदेल पाटा बाबाम पाटा आदिञ।

इस गीत में कोई पिता अपने बेटी से कहता है कि मैं तुम्हारे लिए धन-सम्पति या रुपये-पैसे पूँजी के रूप में भविष्य के लिए रख दूँगा। बाद में बेटी पिता से कहती है कि बाबा मुझे अजय नदी का बालू ढेर लगा दिया तथा शिमल पाटा (पट्टा) बनवा दिये।

इसमें पूँजी और पाटा शब्द की आवृत्ति हुई है, पर दो भिन्न अर्थों में पहला पूँजी का अर्थ-धन, सम्पति, रुपये-पैस एवं दूसरे पूँजी का अर्थ- इकट्ठा या ढेर लगाना। इसी प्रकार पहला पाटा का अर्थ बचत, खतियान तथा दूसरे का सेमल लकड़ी का पट्टा है। अतः पूँजी और पाटा में यमक अलंकार है।

सारेच...

Scanned with CamScanner